बी० ए० पार्ट - III, पेपर - 6 (VI), दिनांक - 01/05/2020

डॉ० चन्दा कुमारी
गैस्ट टीचर
हिन्दी विभाग
रोहतास महिला महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास

Scanned with CamScanner

भारतीय काव्य शास्त्र — काव्य हेतु

काव्य हेतु :— 'हेतु' का शाब्दिक अर्थ है 'कारण'। 'काव्य हेतु' का अर्थ हुआ काव्य की उत्पत्ति का कारण। किसी व्यक्ति में काव्य रचना की सामर्थ्य उत्पन्न कर देने वाले कारण काव्य हेतु कहलाते हैं। कहा जाता है कि काव्य 'कार्य' है और 'हेतु' कारण है। काव्य हेतु पर विचार करते हुए लिखा है— "हेतु का अभिप्राय उन साधनों से है, जो कवि की काव्य रचना में सहायक होते हैं।"

भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य हेतुओं पर पर्याप्त विचार किया गया है और तीन काव्य हेतु माने गये हैं

① प्रतिभा
② व्युत्पत्ति
③ अभ्यास

इनमें से प्रतिभा सर्वप्रमुख काव्य हेतु है जिसे काव्यत्व का बीज माना गया है। 'प्रतिभा' के ~~अभाव~~ अभाव में कोई व्यक्ति रचना नहीं कर सकता।

सर्वप्रथम 'अग्नि पुराण' में विचार किया गया और प्रतिभा, वेदज्ञान तथा लोकव्यवहार को काव्य हेतु के रूप में स्वीकार किया गया :—

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र, शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा॥

अर्थात "लोक में नरत्व दुर्लभ है और उसमें विद्यावान नर

Scanned with CamScanner

होना दुर्लभ है। कवित्व परम दुर्लभ है और कविता करने की शक्ति तो और भी दुर्लभ है।"

1. आचार्य भामह का मत :— भामह ने अपने ग्रन्थ 'काव्यालंकार' में स्वीकार किया है कि गुरु के उपदेश से जड़ बुद्धि भी शास्त्र अध्ययन करने में समर्थ हो सकता है किन्तु काव्य तो किसी 'प्रतिभाशाली' द्वारा ही रचा जा सकता है। भामह 'प्रतिभा' को काव्य का प्रधान हेतु स्वीकार करते हैं। भामह 'प्रतिभा' के साथ-साथ 'व्युत्पत्ति' एवं अभ्यास को भी काव्य हेतुओं में स्थान देने के पक्षधर हैं।

2. आचार्य दण्डी का मत :— आचार्य दण्डी ने अपने ग्रन्थ 'काव्यादर्श' में 'प्रतिभा' ज्ञान, अभियोग और लोकव्यवहार एवं शास्त्रज्ञान को काव्य हेतुओं के रूप में मान्यता दी है उनके अनुसार "नैसर्गिक प्रतिभा, निर्मल शास्त्र ज्ञान और बहु-चर्चा काव्य संपत्ति में कारण होते हैं।" प्रतिभा से उनका तात्पर्य जन्मजात प्रतिभा से है, जो ईश्वर प्रदत्त होती है, प्रतिभा के अभाव में निरन्तर की काव्य रचना निरन्तर अभ्यास एवं शास्त्र ज्ञान के हो सकती है।

3. आचार्य वामन का मत :— वामन ने अपने ग्रन्थ 'काव्यालंकार सूत्रवृत्ति' में प्रतिभा को जन्मजात गुण मानते हुए इसे प्रमुख काव्य हेतु स्वीकार किया है।

"कवित्व बीजं प्रतिभानं कवित्वस्य बीजम्"

आचार्य मम्मट :- मम्मट ने प्रतिभा को एक नया नाम दिया। वे इसे 'शक्ति' कहते हैं और काव्य का बीज स्वीकार करते हैं जिसके बिना काव्य की रचना असम्भव है।

'शक्ति: कवित्व बीज रूप: संस्कार विशेष:'

शक्ति कवित्व का बीजरूप संस्कार विशेष है, जिसके बिना काव्य सृजन नहीं हो सकता। प्रतिभा का स्वरूप इस प्रकार आचार्यों ने स्पष्ट किया है

प्रतिभा काव्य का मूल हेतु है।

यह ईश्वर प्रदत्त शक्ति है।

प्रतिभा नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा है।

प्रतिभा के बल पर ही कवि अपूर्व शब्दों, अपूर्व भावों, अलंकारों, उक्ति वैचित्र्य आदि का विधान करता है।

प्रतिभा दो प्रकार की होती है— कारयित्री प्रतिभा और भावयित्री प्रतिभा।

कारयित्री प्रतिभा वह होती है जिसके बल पर कवि कविता लिखता है।

भावयित्री प्रतिभा वह होती जिसके बल पर कोई पाठक कविता को समझता है।

सभी आचार्यों ने प्रतिभा के महत्व को स्वीकार किया है और इसे काव्य का मूल हेतु माना है।

Scanned with CamScanner

2. व्युत्पत्ति :- व्युत्पत्ति का शाब्दिक अर्थ है ~~निपुणता~~ निपुणता, पांडित्य या विद्वता। यह ज्ञानोपलब्धि शास्त्रों के अध्ययन और लोक व्यवहार के अवेक्षण से होती है। विद्वानों का मत है कि साहित्य के गहन चिन्तन-मनन से कवि की उक्ति में सौन्दर्य का समावेश हो जाता है और उसकी रचना सुव्यवस्थित हो जाती है।

रुद्रट :- यह बताया है कि छन्द, व्याकरण, कला, पद और पदार्थ के उचित अनुचित का सम्यक ज्ञान ही व्युत्पत्ति कहा जाता है।

राजशेखर के अनुसार - उचितानुचित विवेक व्युत्पत्ति।' अर्थात उचित - अनुचित का विवेक ही व्युत्पत्ति है। व्युत्पत्ति से जहाँ काव्य में सौन्दर्य एवं व्यवस्था का समावेश होता है वहीं लौकिक व्युत्पत्ति से विषय की सम्यक प्रस्तुति सम्भव होती है। लोक और शास्त्र का अध्ययन कवि को त्रुटियों से बचाता है। वर्ण्य विषय का ज्ञान, ऋतु ज्ञान, देश ज्ञान, भौगोलिक जानकारी आदि से कविता में त्रुटि आने की सम्भावना नहीं रहती है। शब्द शिल्प और भाषा पर अधिकार पटुता से ही होती है तभी वह उत्तम काव्य की रचना करने में समर्थ हो पाता है।

- अभ्यास :- काव्य निर्माण का तीसरा हेतु अभ्यास है। भामह ने लिखा है कि शब्दार्थ के स्वरूप का ज्ञान करके सतत अभ्यास द्वारा उनकी उपासना

करनी चाहिए। आचार्य वामन ने भी अभ्यास को महत्व देते हुए लिखा है 'अभ्यासोहि कर्मसु कौशलं मावहति'। अर्थात अभ्यास के द्वारा ही कवि कर्म में कुशलता प्राप्त की जा सकती है।

आचार्य दण्डी ने तो अभ्यास को ही काव्य का प्रमुख हेतु माना है। निरन्तर अभ्यास से ही उनकी कविता निखरती है। जो कवि कीर्ति चाहते हैं उन्हें आलस्य को त्यागकर सरस्वती की उपासना करनी चाहिए। कवि कर्म का अभ्यास करते रहना चाहिए। अभ्यास के महत्व को निम्न शब्दों में स्वीकार किया गया है। पाश्चात्य विचारकों ने भी अपने ढंग से काव्य हेतुओं पर विचार किया है।

1. अरस्तु — अरस्तु के अनुसार कवि की प्रतिभा जन्मजात होती है। वे कहते हैं "A man of born talent

2. होरेस — इन्होंने प्रतिभा और अभ्यास को काव्य हेतु माना है। "For my part I fail to see the use of study without wit and of wit without training."

क्रोचे :— क्रोचे ने स्वयं प्रकाश ज्ञान और

वाह्याभिव्यंजना की महत्ता स्वीकारते हुए काव्य हेतुओं में वस्तुतः प्रतिभा और अभ्यास को ही महत्व दिया है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रतिभा व्युत्पत्ति और अभ्यास ही प्रमुख काव्य हेतु हैं। जिस प्रकार पानी को बार-बार छानने से वह निर्दोष हो जाता है उसी प्रकार व्युत्पत्ति और अभ्यास से प्रतिभा को निर्दोष और आकर्षक बनाया जा सकता है।

Scanned with CamScanner